International Journal of Veterinary Sciences and Animal Husbandry

ISSN: 2456-2912
VET 2016; 1(3): 17-18
© 2016 VET
www.veterinarypaper.com
Received: 05-09-2016
Accepted: 06-10-2016

डा. उत्कर्ष कुमार त्रिपाठी
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश, भारत।

डा. प्रसांता बोरो
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश, भारत।

डा. अनुराधा कुमारी
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश, भारत।

डा. दुर्गेश मुरारी गोल्हेर
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश, भारत।

डा. रमादेवी निम्मनापल्ली
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
डा. उत्कर्ष कुमार त्रिपाठी
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, कृषि विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

उच्च दुग्ध उत्पादन हेतु संकर नस्ल के पशुओं का समुचित प्रबंधन

डा. उत्कर्ष कुमार त्रिपाठी, डा. प्रसांता बोरो, डा. अनुराधा कुमारी, डा. दुर्गेश मुरारी गोल्हेर एव डा. रमादेवी निम्मनापल्ली

सारांश
१९वीं पशु गणना के अनुसार देसी पशुओं की तुलना में संकर एवं विदेशी नस्ल के पशुओं की संख्यां लगातार बढती जा रही है। दुग्ध उत्पादन की कुल हिस्सेदारी में भी संकर नस्ल के पशुओं की हिस्सेदारी (२५ प्रतिशत) देसी पशुओं (२०प्रतिशत) की तुलना में ज्यादा है । २०१२–१३ में दुग्ध उत्पादन १३२.४ मिलियन टन रही जो कि ४ प्रतिशत की वृद्धि दर अंकित करते हुए २०१३–१४ में यह १३७.७ मिलियन टन हो गयी और उसके उपरांत यह सतत वृद्धि पर आगे बढ़ रही है। भारत की बढती जनसंख्याँ को देखते हुए एवं हमें २०२० तक की अपेक्षित मांग को पूरा करने के लिए संकर नस्ल के पशुओं पर ध्यान देने की अत्यधिक आवश्यकता है। चूँकि संकर नस्ल के पशुओं का अनुकूलन उनके मूल स्थान यानि ठण्डे प्रदेशों के अनुसार होता है। अतः उनकी आवास, पोषण एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष आवश्यकताओं को पूर्ण करना उनसे उचित उत्पादकता प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक हो जाता है।

कूट शब्द: संकर नस्ल, दुग्ध, देसी, प्रबन्धन, पोषण, आवास, स्वास्थ्य

प्रस्तावना
भारतवर्ष सदा से ही पशुपालन में अग्रणी देश रहा है। १९वीं पशु गणना–२०१२ के अनुसार भारत में गौवंश की संख्या १९०.६ मिलियन एवं भैसों की संख्या १०८.७ मिलियन पाई गयी। भारत के पशुपालन व्यवस्था की ही देन है कि दुग्ध उत्पादन में हम पिछले कई वर्षों से विश्व के अग्रणी बने हुए हैं। २०१२–१३ में दुग्ध उत्पादन १३२.४ मिलियन टन रही जो कि ४ प्रतिशत की वृद्धि दर अंकित करते हुए २०१३–१४ में यह १३७.७ मिलियन टन हो गयी और उसके उपरांत यह सतत वृद्धि पर आगे बढ़ रही है। यदि हम गौवंश की बात करें तो इसका कुल दुग्ध उत्पादन में हिस्सेदारी लगभग ४५ प्रतिशत की है जिनमे २० प्रतिशत हमारे देसी नस्ल के पशुओं की तो २५ प्रतिशत विदेशी एवं संकर नस्ल की पशुओं की हिस्सेदारी है। यदि हम गौवंश पशुओं की संख्या की बात करें तो पाते हैं कि भारत सरकार की १९वीं पशु गणना–२०१२ के अनुसार देसी नस्ल के पशुओं की संख्या (१५१.१७२ मिलियन) की तुलना में संकर नस्ल के पशुओं की संख्या (३९.७३२ मिलियन) कम है। परन्तु यदि हम पशुपालकों के रुझान की बात करें तो पातें हैं की वर्ष २००७–२०१२ में देसी गौवंश (–४.१० प्रतिशत) की तुलना में विदेशी एवं संकर गौवंश की वृद्धि दर (२०.१८ प्रतिशत) अधिक रही, जिससे परिलक्षित होता है कि अधिक दुग्ध उत्पादन की चाह में हमारे पशुपालकों का रुझान संकर नस्ल के पशुओं की ओर सतत बढ़ रहा है।

सर्वविदित है की संकर नस्ल के पशु देसी नस्ल के पशुओं की तुलना में अधिक देखभाल एवं प्रबंधन की आवश्यकता वाले होते हैं। इनकी दुग्ध उत्पादन की समुचित क्षमता को प्राप्त करने हेतु उनकी विशेष देखरेख की सतत आवश्यकता होती है। संकर नस्ल के पशुओं का उचित प्रबंधन हमारे पशुपालकों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य दे सकता है।

संकर पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता देसी पशुओं की तुलना में काफी अच्छी होती है। इनकी दो व्यातों के बीच की अवधि कम (लगभग १४ माह) होती है और यह शीघ्र परिपक्वता को भी प्राप्त होती हैं। इनके उच्च वंशज गुणों का लाभ तभी प्राप्त होना संभव है जब इनका उचित ढंग से पालन पोषण व रख रखाव किया जाये।

देसी पशुओं की तुलना में संकर पशुओं को बेहतर रख रखाव, स्वास्थ्य रक्षा एवं प्रबंधन की आवश्यकता होती है, क्योकि संकर पशुओं में विदेशी रक्त का समवेश होता है जो कि हमारे देश कि जलवायु के लिए अनुकूल नहीं है। अधिकतर विदेशी पशुओं के मूल देश की जलवायु ठंडी है व उनमे मूल देश की जलवायु के अनुसार ही वंशज गुणों का विकास हुआ है।

अतः यह आवश्यक है कि संकर पशुओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप ही जन्म से वयस्क अवस्था तक रख रखाव और स्वास्थ्य रक्षा की समुचित सुविधाएँ प्रदान की जाये जिससे उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता का अधिकतम लाभ उठाये जा सके।

आवास प्रबंधन

पशु को साफ सुथरे स्थान पर रखें। पशुओं के रहने के लिए उचित स्थान, वायु संचार एवं रौशनी आदि की उचित व्यवस्था करें। संकर पशुओं को अधिक लू गर्मी आदि से बचाएं। गर्मियों में छाया की व्यवस्था करें तथा लू के गर्म झोंकों से बचने के लिए पशु गृह के पास छायादार वृक्ष लगायें तथा पीने के लिए स्वच्छ एवं शीतल जल की व्यवस्था करें। पशु गृह ऐसे स्थान पर बनायें जो कि ऊँचा हो तथा बरसात में उसके आसपास पानी न भरता हो।

एक पशु को सामान्यतया लगभग ६ वर्ग मीटर फर्श स्थान की आवश्यकता होती है। पशु बाड़ा बनाते समय चारा डालने का स्थान (१.२५ मीटर), नाद (०.७५ मीटर), पशुओं के खड़े होने का स्थान (२ मीटर), मलमूत्र नाली (०.६० मीटर) तथा दूध दुहने के लिए मार्ग (१.५० मीटर) की समुचित व्यवस्था करें। पशु गृह का फर्श सीमेंट का बनायें तथा संकर पशुओं को फिसलने से बचाने के लिए फर्श पर खांचे बनवा दें।

पोषण प्रबंधन

देसी पशुओं की तुलना में संकर पशुओं का जन्म भार अधिक होता है व विदेशी रक्त के समावेश के कारण उनका विकास भी तुलनात्मक रूप से अधिक तीव्र होता है। अतः संकर पशुओं को देसी पशुओं से अधिक आहार की भी आवश्यकता होती है। यदि उन्हें समुचित मात्रा में उपयुक्त आहार न दिया गया तो उनका विकास रुक जायेगा, बछिया देर से परिपक्व होगी, देर से गर्म होगी (मद में आयेगी) और समय पर गर्भित भी नहीं होगी तथा उसके उपरान्त दुधारू संकर पशु समुचित मात्र में दूध भी नहीं देंगे। इन सब समस्याओं से बचने के लिए संकर पशुओं को ३ माह की अवस्था के बाद से इस प्रकार का आहार दें–

३–४ माह– १.२ किलो दाना तथा १.५ किलो उत्तम प्रकार की सुखी घास (हे या हरा चारा)

४–५ माह– १.६ किलो दाना तथा ५–१० किलो हे या हरा चारा

५–६ माह – २ किलो दाना तथा १०–१५ किलो हे या हरा चारा

६–९ माह –२ किलो दाना तथा १२–१८ किलो हे या हरा चारा

६–१२ माह– २ किलो दाना तथा १५–२० किलो हे या हरा चारा

बछिया (एक वर्ष से गाभिन होने तक)–२ किलो दाना ३०–३५ किलो जई, मक्का, ज्वार का हरा चारा।

एक वयस्क गाय के लिए– १.५ किलो दाना तथा १५ किलो बरसीम अदि का चारा व ३ किलो भूसा।

बछड़ों को दिए जाने वाले दानें में मक्का या जौ ३० भाग, चना १० भाग, गेहूं का चोकर २० भाग, मूंगफली की खली ३७ भाग एवं खनिज मिश्रण ३ भाग मिलाएं। साधारण दाने में ४० भाग गेंहूँ का चोकर ३० भाग बिना छिलके वाली मूंगफली की खली, २० भाग जौ व मक्का दला हुआ, ७ भाग शीरा तथा ३ भाग खनिज मिश्रण मिलाएं।

वयस्क पशुओं को यदि प्रचुर मात्रा में हरा चारा उपलब्ध न हो तो ८–१० किलो दलहनी चारे जैसे बरसीम और लोबिया अथवा १४ किलो जई, ज्वार मक्का आदि के लिए एक किलो के हिसाब से अतिरिक्त दाना दें। गाय को दुग्ध उत्पादन के हिसाब से निम्न प्रकार दाना दें। १० किलो से कम दूध देने वाली गाय को १ किलो दाना प्रति ३ किलो दूध के लिए। १०–२० किलो दूध देने वाली गाय को १ किलो दाना प्रति २.५ किलो दूध के लिए। २०–३० किलो दूध देने वाली गाय को १ किलो दाना प्रति २ किलो दूध के लिए।

स्वास्थ्य प्रबंधन

संकर पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए जन्म से ही उनके स्वस्थ पर ध्यान देना आवश्यक है क्योकि संकर संकर पशुओं में स्थानीय जलवायु की विषमता को सहने की क्षमता कम होती है।

इसके लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं।

पैदा होने पर बछड़ों के नाल पर टिंक्चर आयोडीन लगा कर नाल को सील करें व औरोमाइसिन नुट्रीशनल फार्मूला (साइनामिड) २ चम्मच प्रति ४५ किलो शारीरिक भार के अनुसार पहले २ सप्ताह दूध में मिलकर पिलायें. दूसरे दिन से विटामिनों की पूर्ति हेतु न्यूविमिन फोर्ट ५ ग्राम या वीटाबेलंद १–२ मिली प्रतिदिन पहले दो सप्ताह एक दिन छोड़कर तीसरे सप्ताह तथा एक बार चौथे सप्ताह में दें।

बछड़े या बछियों में पैदा होने के बाद मृत्यु का बहुत बड़ा कारण पेट के कीड़े होना पाया गया है। यदि पशु चिकित्सालय में प्रयोगशाला की सुविधा हो तो माह में एक बार गोबर का परिक्षण कराकर तदानुसार पशु चिकित्सक की सलाह से दावा पिलायें। गोलाकार कृमियों को मरने के लिए पिपराजीन एडीपेट १० ग्राम प्रति ४५ किलो शारीरिक भार की दर से दें। पहली खुराक एक सप्ताह की आयु पर व उसके बाद ६ माह तक २० दिन के अन्तराल पर दें। फीता कृमियों को मारने के लिए ३० मिली प्रति १०० किलो भार जैनिल पिलायें। ३ सप्ताह से ६ माह की आयु में बछड़े और बछियों में कोक्सीडीयोसिस का रोग लग जाता है जिसके प्रमुख लक्षणों में दस्त आना व गोबर के साथ आव आना शामिल होता है। कभी–कभी आव के साथ खून भी आ जाता है। उपचार के लिए सल्फामेथाजीन की एक टिकिया प्रति ५० किलो शारीरिक भार के अनुसार दें।

खुरपका–मुंहपका से बचाव के लिए पहला टीका ६ सप्ताह की आयु पर, उसके बाद ४ माह की आयु पर तथा उसके बाद ६ माह की आयु पर लगवाएं। गलघोंटू का टीका मई–जून के में ६ माह से अधिक के पशुओं को प्रति वर्ष आयल अड्जुवेंट वैक्सीन का टीका लगवाएं। लंगड़ा बुखार – स्वस्थ पशुओं को ६ माह की आयु से पहले टीका लगवाएं तदुपरांत ३ वर्ष तक प्रतिवर्ष तक टीका दोहराएँ।

परजीवियो से पशुओंकी रक्षा करना बहुत महत्वपूर्ण होता है। पशु के शरीर पर किलनी, जूं, पिस्सू आदि हो जाने से विभिन्न प्रकार के चरम रोग हो जाते हैं। ये अनेक रोग के कीटाणुओं को पशुओं के शारीर में प्रवेश करा देते हैं। अतः पशुओं के शरीर तथा आवास गृह में कीटनाशकों का छिड़काव करें। ये जहरीले होते हैं अतः इनके प्रयोग में पूरी सावधानी बरतें। पशुओं के शरीर एवं आवास गृह में ०.५ प्रतिशत मेलाथियोन का छिड़काव कर सकते हैं। यदि सुमेथिओन का छिड़काव करना हो तो पशुओं के शरीर पर ०.५ प्रतिशत तथा आवास गृह में ०.१ प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

सन्दर्भ ग्रर्थ

1. मूल पशुपालन सांख्यकी, २०१५, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार
2. १९वीं पशु गणना, पशुपालन विभाग, भारत सरकार
3. पशु पोषण एवं प्रबंधन, पशु पोषण विभाग, राष्ट्रीय डेयरी अनुसन्धान संस्थान, करनाल, हरियाणा.